आपकी जिन्दगी बहुत ही अनमोल और सुन्दर है। –अज्ञात।

विचार-प्रवाह

देहरादून, सोमवार, 25 अप्रैल 2022

पेज थ्री

www.page3news.in

युद्ध की सबसे ज्यादा मार

घर–परिवार से दूर किसी अनजान देश में पढ़ने गए स्टूडेंट्स इसी श्रेणी में आते हैं। अच्छी बात यह है कि भारत सरकार न केवल इन स्टूडेंट्स के साथ खड़ी रही बल्कि असाधारण कूटनीतिक कौशल का प्रदर्शन करते हुए इन सबको सुरक्षित अपने देश ले भी आई।

सुमन वर्मा।।

यूक्रेन के शहर सूमी में फंसे भारतीय स्टूडेंट्स को वहां से कामयाबी के साथ निकाल लाए गए। उन्हें बसों में बिठाकर यूक्रेन के अपेक्षाकृत सुरक्षित शहरों की ओर ले जाया गया, जहां से ऑपरेशन गंगा के तहत चलाए जा रहे विमानों के जरिए स्वदेश लाया जाएगा। जिन प्रतिकूल हालात में तमाम मुश्किलों के बीच इन 694 स्टूडेंट्स को बचाकर लाया जा रहा है, उसके लिए भारतीय विदेश मंत्रालय और यूक्रेन स्थित भारतीय दूतावास के अधिकारियों की तारीफ करनी होगी। सूमी यूक्रेन के उन कुछेक शहरों में शामिल है, जहां युद्ध की सबसे ज्यादा मार पड़ रही है। स्वाभाविक ही वहां फंसे स्टूडेंट्स खुद को सबसे ज्यादा घिरे हुए महसूस कर रहे थे। बाहर निकलना तो खतरे से खाली नहीं ही था, बंकरों या कमरों में बंद रहना भी इसलिए मुश्किल था क्योंकि इससे खाना और पानी की जरूरत पूरी नहीं हो पा रही थी। एक बार तो वह घड़ी भी आई, जब हर तरफ से लाचार ये स्टूडेंट्स पैदल ही निकल पड़े कि चाहे बम या मिसाइल हमलों में जान चली जाए, पर देश लौटने की कोशिश जरूर करेंगे। बड़ी मुश्किल से भारतीय दूतावास अधिकारी उन्हें समझा–बुझाकर वापस लौटने को राजी कर सके। चूंकि यह शहर रूसी सीमा से करीब है, इसलिए युद्धविराम के बगैर इन स्टूडेंट्स को वहां से सुरक्षित नहीं निकाला जा सकता था। जब रूस ने युद्धविराम की घोषणा की, तब भी इन्हें निकालने का एक प्रयास नाकाम हो गया क्योंकि इन्हें रूस की सीमा से होकर जाने देने के लिए यूक्रेन राजी नहीं था। इससे पता चलता है कि युद्ध के हालात में छोटी–छोटी बातें भी कितनी बड़ी बाधा बन जाती हैं। बहरहाल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद पहल करते हुए यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बातचीत की और तब जाकर इन स्टूडेंट्स को वहां से निकालने की ऐसी योजना बन सकी, जिस पर सभी पक्ष सहमत हुए। ऑपरेशन गंगा का यह सबसे कठिन हिस्सा था, जो सफलतापूर्वक पूरा हुआ। हालांकि अब भी कई भारतीय यूक्रेन के अलग–अलग हिस्सों में फंसे हुए हैं। उनके लिए रूस और यूक्रेन की सहमति से मानव गलियारा बनाया गया है। विदेश मंत्रालय ने ऐसे सभी भारतीयों से अपील की है कि मानव गलियारा का फायदा उठाते हुए जो भी साधन उपलब्ध हों, उनसे सुरक्षित क्षेत्रों में आ जाएं।

युद्ध है ही ऐसी चीज जिसका सबसे ज्यादा नुकसान उन लोगों को उठाना पड़ता है, जो उसके लिए सबसे कम जिम्मेदार होते हैं। और जो सबसे ज्यादा मजबूर, सबसे ज्यादा लाचार होते हैं। घर–परिवार से दूर किसी अनजान देश में पढ़ने गए स्टूडेंट्स इसी श्रेणी में आते हैं। अच्छी बात यह है कि भारत सरकार न केवल इन स्टूडेंट्स के साथ खड़ी रही बल्कि असाधारण कूटनीतिक कौशल का प्रदर्शन करते हुए इन सबको सुरक्षित अपने देश ले भी आई। इस सफल अभियान से दुनिया भर में फैले एनआरआई समुदाय में भी एक नया आत्मविश्वास भरा है कि किसी भी संकट की स्थिति में उनका देश उनके साथ खड़ा रहेगा।

सौंदर्यीकरण

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। इतिहास में वर्णन है कि सिख राजा रणजीत सिंह ने इस जगह की महानता को देखकर यहां मंदिर भी बनवाया था। काठगढ़ मंदिर के सौंदर्यीकरण के बारे में कथा मिलती है कि महाराजा रणजीत सिंह को यह धाम अत्यंत प्रिय था। उन्होंने अपने शासनकाल के दौरान मंदिर का विस्तार किया। उनकी काठगढ़ मंदिर के प्रति इतनी अगाध आस्था थी कि वह प्रत्येक शुभ कार्य में मंदिर के समीप ही स्थित कुएं का जल प्रयोग करते थे। इतिहास का मुख्य अध्याय यूनानी राजा सिकंदर से भी जुड़ा है। कहा जाता है– 326 ई. पूर्व जब सिकंदर भारत में तबाही मचाते हुए आगे बढ़ रहा था तो एक यही मंदिर था जहां से उसकी सेनाएं आगे नहीं बढ़ पाई थी। लाख के बावजूद जब सिकंदर आगे नहीं बढ़ पाया तो इस जगह की महानता को समझा। बाद में यहां उसने यूनानी कला से लबरेज चबूतरे भी बनवाए।

संपादकीय

बातचीत से मिला क्या?

वर्ष 2014 में केंद्र में नरेंद्र मोदी सरकार के आने के बाद से वो कश्मीर मुद्दे पर काफी मुखर रहते हैं। वो पहले भी कश्मीर में बिगड़े हालात की पूरी जिम्मेदारी अकेले केंद्र सरकार पर थोपते रहे और अब भी यही कर रहे हैं। उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स में दिसंबर 2019 में क्या 'इंटेलिजेंस एजेंसिया चीजें ठीक कर सकती हैं' विषय पर बोलते हुए भी भारत की नीति पर सवाल उठाया था। दुलत ने तब कहा था, 'कश्मीर से एक साफ संदेश आया है कि प्यार और बड़े दिल से बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है, लेकिन ताकत से नहीं। मुझे लगता है कि हमने पिछले 15 महीनों में यही गलती की है।' उन्होंने जोर देकर कहा कि कश्मीर घाटी में ताकत का इस्तेमाल सही नहीं है। उन्होंने कहा, 'हम लोगों से बातचीत बंद करके गलती कर रहे हैं। वक्त की मांग है कि हम बातचीत करें हुर्रियत से भी।' वो कहते हैं, 'उनसे बातचीत का मकसद उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रिया में लाना है।' हैरत की बात तो यह है कि दुलत हुर्रियत के अस्तित्व पर सवाल क्या उठाएंगे, उन्होंने तो अलगाववादियों के संरक्षण और सुरक्षा के लिए भारत सरकार पर दबाव बनाया और जिनकी जड़ें उखाड़नी थीं, उन्हें खाद–पानी देकर मजबूत किया।

ध्यान रहे कि यासीन मलिक ने भारतीय वायुसेना के चार अधिकारियों की हत्या की है। हैरत की बात है कि वह बार–बार कबूलता रहा कि उसी ने अधिकारियों की हत्या की, फिर भी खुलेआम घूमता रहा। उसे 2019 में गिरफ्तार किया गया।

कश्मीरियों को जानने का गुमान

नवीन कुमार पाण्डेय।।

भारत की खुफिया एजेंसी रिसर्च एंड एनालिसिस विंग यानी रॉ के पूर्व प्रमुख अमरजीत सिंह दुलत ने कश्मीरी पंडितों पर हुए जुल्म और उनके पलायन पर बनी फिल्म को प्रॉपगैंडा बताकर खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि कश्मीरी पंडितों पर बर्बरता को लेकर जो धारणा बनी है, हकीकत उससे बहुत अलग है। उन्होंने यह भी कहा कि जम्मू–कश्मीर लिबरेशन फ्रंट चीफ यासीन मलिक को 30 साल बाद फांसी देकर ही क्या मिलेगा? ध्यान रहे कि यासीन मलिक ने भारतीय वायुसेना के चार अधिकारियों की हत्या की है। हैरत की बात है कि वह बार–बार कबूलता रहा कि उसी ने अधिकारियों की हत्या की, फिर भी खुलेआम घूमता रहा। उसे 2019 में गिरफ्तार किया गया। फिर यासीन ही क्या, कश्मीरी पंडितों के किसी भी हत्यारे पर ना मुकदमा चला और न सजा मिली।

खुफिया अधिकारी थे तो क्या कर रहे थे दुलत? एएस दुलत वर्ष 1989–90 में कश्मीर में इंटेलिजेंस ब्यूरो के स्टेशन हेड थे। उसी दौर में कश्मीरी पंडितों का पलायन हुआ और लाखों पंडित रातोंरात घर–बार छोड़ने को मजबूर हुए। उनकी हत्याएं हुईं, महिलाओं का रेप हुआ और मस्जिदों के लाउडस्पीकरों से धमकियां दी गईं जो पंडित घाटी नहीं छोड़ेगा, उसे मार दिया जाएगा। तब

अखबार में भी इश्तेहार छपे कि कश्मीरी पंडित जल्द से जल्द घर छोड़ दें। लेकिन दुलत ने कश्मीर फाइल्स को प्रॉपगैंडा बता दिया। उन्हें यह बताना चाहिए था कि आखिर फिल्म का कौन सा हिस्सा झूठ है। सवाल यह है कि क्या झूठी फिल्म को देखकर कश्मीरी पंडितों ही नहीं आम लोगों को दिल दहल रहा है? क्या उनके आंसू भी झूठे हैं? क्या दुलत ने इस डर से फिल्म को झूठ बता दिया क्योंकि अगर वो इसे स्वीकार करेंगे तो खुफिया अधिकारी के तौर पर पूरी तरह विफल रहने को लेकर उनकी आलोचना होगी? क्या यह सवाल नहीं उठना चाहिए कि जब घाटी के मुसलमानों के मन में कश्मीरी पंडितों के खिलाफ जहर घुलने लगा था और उन्हें भगाने की योजना बन रही थी तब आईबी ऑफिसर के रूप में उन्हें बदलते हालात की भनक क्यों नहीं लगी?

दुलत कहते हैं कि वो कश्मीर और कश्मीरियों को वर्षों से जानते हैं और उनके मुताबिक घाटी में आतंकवाद का मुकाबला बंदूकों से नहीं किया जा सकता है, बल्कि बातचीत ही रास्ता है। सितंबर 2018 में अंग्रेजी खबरों की वेबसाइट फर्स्ट पोस्ट को दिए इंटरव्यू में कहा था, 'मैं 30 वर्षों से कश्मीर को बहुत करीब से जानता हूं। मैंने दो वर्ष वहां बतौर आईबी ऑफिसर बिताए। जब आईबी हेडक्वॉर्टर में पोस्टिंग हुई, तब भी मैं कश्मीर डेस्क का ही इनचार्ज था। जब रॉ जॉइन किया तब भी सिर्फ कश्मीर पर काम किया। फिर पीएमओ में ब्रजेश मिश्रा के अधीन भी साढ़े तीन वर्षों तक कश्मीर पर ही काम किया।' दुलत पीएमओ में 2001 से 2004 तक वाजपेयी सरकार के दौरान कश्मीर मामलों के सलाहकार रहे थे।

उन्होंने एक और इंटरव्यू में कहा, 'अटल जी के शासन में हमने हुर्रियत से भी बात की थी। हमें मानना होगा कि विश्वास बहाली के उपायों से ही बातचीत का रास्ता तैयार होगा। इसके लिए ही हमने हुर्रियत की मांग मान ली और कुछ कैदियों को छोड़ दिया था।' दुलत अलगाववादी नेता मीरवाइज उमर फारूक को बड़ी शख्सियत बताकर उससे बातचीत की वकालत करते हैं। वो कहते हैं, 'हुर्रियत तो पूरे कश्मीर से मिट गया, लेकिन मीरवाइज उमर फारूक का कद अब भी काफी बड़ा है। घाटी में उनकी धार्मिक और राजनीतिक भूमिकाएं हैं।'

सूडोकू नवताल- 5203

*****

7							4	
		5		3			7	
					8			2
					1	9		
	2						8	
		6	7					
1			4					
	9			2		5		
	8							1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।

■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

■ पहेली का केवल एक ही हल है।

सूडोकू नवताल -5202 का हल

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7

अपना ब्लॉग

व्यावहारिक शैली को गले लगाना शुरू

मोहन। खुद को 'अभी नहीं तो कभी नहीं' की घुटन भरी स्थिति में फंसा हुआ देखकर हिंदू सर्वत्र सहनशीलता के आत्मघाती दर्शन से इतर, आत्मरक्षा में जैसे को तैसा की व्यावहारिक शैली को गले लगाना शुरू कर रहा है। तो कुल मिलाकर भारत में ये हिजाब का मामला हो या कोई और, हिंदू–मुसलमान के बीच संघर्ष के केंद्र में नैरेटिव सेट करने की होड़ है। एक टीवी ऐंकर ने तो काबुल पर तालिबान के कब्जे के बाद एक कैमरामैन की हत्या होने पर लानतें तालिबानी आतंकियों को नहीं, बंदूक को भेज दीं। वैसे ही सीएए के खिलाफ मुसलमानों को यह दुष्प्रचार करके भड़काया कि इससे उनकी नागरिकता खतरे में आ जाएगी। लेकिन, भारतीय मुसलमानों ने कथित लिबरल गैंग के उकसावे का बहाना पाकर देशभर में तो तांडव किया, उससे देश के उज्ज्वल भविष्य की कामना करने वाला कौन भारतीय सहम नहीं जाएगा? लेकिन, झुके भी तो कैसे, भारतीय मुसलमानों का एक वर्ग तो इस होड़ में है कि हम तो पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान ही क्या दुनिया के किसी भी देश के मुसलमान से ज्यादा धार्मिक हैं।